Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 3977–3983

COMPARATIVE STUDY OF THE IMPACT OF BHAGAVAD GITA PHILOSOPHY ON PERSONAL VALUES OF STUDENTS

श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन का विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Geetika Sharma [1], Dr. Sangeeta Sharaf [2]

[1] Researcher, MATS School of Education, MATS University, Gullu Arang, Raipur CG
[2] (Professor) Directory MATS School of Education MATS University, Gullu Arang, Raipur CG

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.24500

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: The Bhagavad Gita is a source of profound spiritual knowledge and moral guidance. This research studies its impact on the personal values of students, focusing on key principles such as ethics, self-discipline, and social responsibility. This study compares the values of students familiar with and unfamiliar with the teaching of the Gita to understand how the influence of the Gita shapes their personal and social values.

Hindi: श्रीमद्भगवद्गीता एक गहन आध्यात्मिक ज्ञान और नैतिक मार्गदर्शन का स्रोत है। यह शोध विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर इसके प्रभाव का अध्ययन करता है, जिसमें नैतिकता, आत्म-अनुशासन, और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे प्रमुख सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस अध्ययन में गीता के शिक्षण से परिचित और अपरिचित विद्यार्थियों के मूल्यों की तुलना करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि गीता का प्रभाव उनके व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों को कैसे आकार देता है।

Keywords: Bhagavad Gita Philosophy, Higher Secondary School Students, Personal Values श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन, उच्चतर माध्यमिक षाला के विद्यार्थी, व्यक्तिगत मूल्य।

प्रस्तावना -

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शन का एक पूजनीय ग्रंथ है, जो कर्तव्य, नैतिकता और आत्म-साक्षात्कार पर कालातीत शिक्षाएँ प्रदान करता है। वर्तमान समय में, जब विद्यार्थी मनोवैज्ञानिक और नैतिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, गीता की प्रासंगिकता अद्वितीय है। यह शोध तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर गीता के प्रभाव का मूल्यांकन करता है। भगवद्गीता कर्म योग (निःस्वार्थ कर्म), ज्ञान योग (ज्ञान), और भक्ति योग (भक्ति) जैसे सिद्धांतों पर जोर देती है, जो चरित्र निर्माण के लिए आधारभूत हैं। पूर्व के अध्ययनों से पता चलता है कि आध्यात्मिक शिक्षाएँ निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करती हैं, तनाव को कम करती हैं, और भावनात्मक बुद्धिमत्ता बढ़ाती हैं।

OMPARATIVE STUDY OF THE IMPACT OF BHAGAVAD GITA PHILOSOPHY ON PERSONAL VALUES OF STUDENTS

How to cite this article (APA): Sharma, G., and Sharaf, S. (2023). Comparative Study of the Impact of Bhagavad Gita Philosophy on Personal Values of Students. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4*(2), 3977–3983. doi:

प्रयुक्त पदों की प्रकार्यात्मक क्रियात्मक शब्दों की परिभाषा -

श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति और दर्शन का एक अनुपम ग्रंथ है, जिसे महाभारत के भीष्म पर्व के अंतर्गत स्थान दिया गया है। यह 18 अध्यायों और 700 श्लोकों का संकलन है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच का संवाद शामिल है। यह संवाद न केवल अर्जुन की दुविधाओं को सुलझाने के लिए था, बल्कि मानव जीवन की जटिलताओं को समझाने और उनका समाधान प्रस्तुत करने के लिए भी है।

गीता का दर्शन मुख्यतः निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है -

1. कर्म योग: निःस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्यों का पालन करना।
2. ज्ञान योग: आत्मा और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जानना।
3. भक्ति योग: परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण और भक्ति।
4. धर्म का पालन: प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने स्वधर्म (कर्तव्य) का पालन करना।
5. निष्काम कर्म: फल की इच्छा किए बिना कर्म करना।

गीता न केवल धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण, आत्म-अनुशासन, और आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करतीहै।

व्यक्तिगत मूल्य -

व्यक्तिगत मूल्य किसी व्यक्ति के जीवन के वे सिद्धांत, आदर्श, और विश्वास हैं, जो उसके व्यवहार, निर्णय, और प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं। यह मूल रूप से वह नैतिक संरचना है, जो किसी व्यक्ति को यह तय करने में मदद करती है कि क्या सही है और क्या गलत।

व्यक्तिगत मूल्य के प्रमुख आयाम -

1. नैतिक मूल्यः सत्य, ईमानदारी, न्याय, और सहिष्णुता जैसे गुण।
2. आध्यात्मिक मूल्यः आत्मा, परमात्मा, और जीवन के गूढ़ प्रश्नों के प्रति जिज्ञासा।
3. सामाजिक मूल्यः दूसरों के प्रति सहानुभूति, परोपकार, और सामाजिक जिम्मेदारी।
4. व्यक्तित्व मूल्यः आत्म-अनुशासन, आत्म-सम्मान, और आत्म-नियंत्रण।
5. भावनात्मक मूल्यः अपने और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना।

व्यक्तिगत मूल्य के उदाहरण -

ईमानदारी: सत्य बोलने और दूसरों को धोखा न देने की आदत।

सहिष्णुता: विभिन्न मतों और संस्कृतियों के प्रति सम्मान।

आत्मनियंत्रण: कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना।

परोपकारिता: दूसरों की भलाई के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करना।

संबंधित शोध

साहित्य का अध्ययन -

शर्मा डॉ. भारती 2022 वर्तमान परिस्थिति में श्रीमद्भगवद्गीता में अंतर्निहित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन पर शोध किया एवं निष्कर्ष में पाया कि श्रीमद्भगवद्गीता में अंतर्निहित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक

अध्ययन से वर्तमान परिस्थिति में विशेष रूप शिक्षा के पथ पर वापस से अग्रसर होने में शैक्षिक मूल्यों को जो कि गीता के समीक्षात्मक अध्ययन से प्राप्त हुए थे वे कारगर सिद्ध हुए हैं। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन के लिये अनिवार्य है, इसका महामंत्र मुश्किलो से उबारने वाले हैं और मानसिक शांति प्रदान करते हैं।

देवी सीमा (जुलाई सितम्बर 2022) ने श्रीमद्भगवद्गीता का शिक्षा दर्शन तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उसकी उपयोगिता एक विष्लेषणात्मक अध्ययन नामक शोध शीर्षक पर अध्ययन किया । इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि शिक्षा का दर्शन शिक्षा संबंधी अनेक प्रश्नों का उत्तर खोजता है जीवन दर्शन और शिक्षा दर्शन के मध्य कोई पार्थक्य नहीं किया जा सकता है । प्राचीन भारतीय दर्शन में जीवन का सच्चा सुख, सच्चा ज्ञान, श्रेष्ठ आचरण, जीवन के प्रति निर्मल दृष्टि एवं उच्च आदर्श निहित है। अतः भारतीय दर्शन में निहित शैक्षिक तत्व वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक है।

काबरा नटवर (अक्टूबर 2022) श्रीमद्भगवद्गीता जीवन दर्शन नामक शोध शीर्षक पर अध्ययन किया । इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ईश्वर हर स्थिति में समान रूप से मौजूद है। इसका सही उपयोग करने से व्यक्ति का कल्याण निश्चित है. यह दिव्य स्थिति को प्राप्त करता है। और समानता या समता और कल्याण प्राप्त करता है।

अग्रवाल सुनीता-2014 ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शीर्षक पर शोध किया एवं निष्कर्ष में पाया कि शिक्षा के मूल्यों की शिक्षा को औपचारिक न बनाकर अनिवार्य कर दिया जाये तो हम पतन की ओर जाने से समाज व राष्ट्र को रोक सकते हैं, देश, समाज व मानव जाति की शांति व सुरक्षा और विकास तथा उसकी खुशहाली का एकमात्र विकल्प मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है जिससे समाज के प्रत्येक वर्ण का दृष्टिकोण सकारात्मक बन सके।

ओसवाल भरत सिंह (10 जून 2017) मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्व एवं आवश्यकता विषय पर शोध किया व निष्कर्ष में यह पाया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अंतर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेमपूर्वक जीवन यापन करना सीखे। शिक्षा से ऐसा मनुष्य बनाना है जो स्वेच्छा से भारतीय संस्कृति के मूल्यों का पालन करे। जिससे व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण संभव ह¨ सक¢।

सिरसवाल देष राज (दिसंबर 2017) भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता दर्शन की मनुष्यता के सबसे बड़ी देन यह है कि उसके जीवन को दिशा देने क लिए मूल्यों का निर्माण और निर्धारण किया है। अतः वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए हमें नैतिकता और उससे जुड़े मूल्यों को तार्किकता के साथ ग्रहण और निर्धारण करना पड़ेगा ताकि ''दार्शनिकता सार्वभौम होती है'' इस कथन का न्यायपूर्ण प्रयोग कर सके।

उद्देश्य -

1. श्रीमद्भगवद्गीतादर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम का शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक आंकलन करना ।

2. श्रीमद्भगवद्गीतादर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का शाला की प्रकृति के आधार पर तुलनात्मक आंकलन

करना ।

परिकल्पनाएँ -

H01 **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा।

H02 **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा ।

H03 **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्षन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा ।

H04 **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा ।

अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन -

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया ।

शोध विधि -

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया ।

जनसंख्या -

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा रायपुर के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों का चयन किया गया ।

न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्ष के रुप में 480 विद्यार्थियों को चुना गया ।

अध्ययन का चर -

चरों की प्रकृति -

स्वतंत्र चर- श्रीमद्भगवद्गीता दर्षन ।

आश्रित चर - व्यक्तिगत मूल्य ।

उपकरण-

प्ररस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा आवकष्कतानुसार निम्नलिखित उपकरण का उपयोग किया गया ।

क्रमांक	उपकरण का नाम	निर्माणकर्ता
1.	गीता दर्शन मापनी	स्वनिर्मित प्रश्न
2.	व्यक्तिगत मूल्य	मधुलिका वर्मा

सांख्यिकी अभिप्रयोग -

परिकल्पना क्रमांक 1 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया। परिणाम तालिका 1.1 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.1

शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर आंकड़े

समूह	व्यक्तिगत मूल्य				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	91.67	9.71	103.37	10.07	10.33**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

- तालिका 1.1 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार व्यक्तिगत मूल्य स्केल पर अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 91.67 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 9.71 है । 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 103.37 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 10.07 है ।

- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 10.33 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए व्यक्तिगत मूल्य पर शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार व्यक्तिगत मूल्य पर शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण ने उनके व्यक्तिगत मूल्यों को संवर्धित किया है । अतः तालिका 1.1 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 1 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य सार्थक रूप से भिन्न नहीं होंगे, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक 2 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया। परिणाम तालिका 1.2 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.2

ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर आंकड़े

समूह	व्यक्तिगत मूल्य				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	91.25	11.12	99.50	12.24	11.13**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

- तालिका 1.2 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार व्यक्तिगत मूल्य स्केल पर अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 91.25 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 11.12 है । 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 99.50 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 12.24 है ।

- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 11.13 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए व्यक्तिगत मूल्य पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार व्यक्तिगत मूल्य पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण ने उनके व्यक्तिगत मूल्यों को संवर्धित किया है । अतः तालिका 1.2 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 2 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य सार्थक रूप से भिन्न नहीं होंगे, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक 3 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा। इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.3 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.3

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर आंकड़े

समूह	व्यक्तिगत मूल्य				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र	92.04	10.42	101.15	11.01	13.55**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

- तालिका 1.3 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार व्यक्तिगत मूल्य स्केल पर अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समूह का मध्यमान (Mean) = 92.04 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 10.42 है । 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समूह का मध्यमान (Mean) = 101.15 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 11.01 है।

- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 13.55 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए व्यक्तिगत मूल्य पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार व्यक्तिगत मूल्य पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के विश्वास, सिद्धांत तथा जीवन के दृष्टिकोण पर सकारात्मक प्रभाव डाला है जो कि उनके संवर्धित व्यक्तिगत मूल्य से परिलक्षित हो रहा है । अतः तालिका 1.3 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 3 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य सार्थक रूप से भिन्न नहीं होंगे, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक 4 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया। परिणाम तालिका 1.4 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.4

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर आंकड़े

समूह	व्यक्तिगत मूल्य				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ	90.88	10.42	101.72	11.72	10.84**

- तालिका 1.4 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार व्यक्तिगत मूल्य स्केल पर अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के समूह का मध्यमान (Mean) = 90.88 तथा प्रामाणिक (standard deviation) = 10.42 है ।
- 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के समूह का मध्यमान (Mean) = 101.72 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 11.72 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 10.84 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए व्यक्तिगत मूल्य पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्नता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार व्यक्तिगत मूल्य पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के विश्वास, सिद्धांत तथा जीवन के दृष्टिकोण पर सकारात्मक प्रभाव डाला है जो कि उनके संवर्धित व्यक्तिगत मूल्य से परिलक्षित हो रहा है । अतः तालिका 1.4 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक 4 श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य सार्थक रूप से भिन्न नहीं होंगे, अस्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष -

1. 02 माह के श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के बाद शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य, ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में ज्यादा संवर्धित हुए ।
2. 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के बाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में लगभग एक समान सुधार हुआ।

श्रीमद्भगवद्गीता विद्यार्थियों के नैतिक, मानसिक, और सामाजिक विकास में एक सकारात्मक भूमिका निभाती है। गीता के शिक्षण से परिचित विद्यार्थियों में नैतिकता, आत्म-अनुशासन, और सहिष्णुता जैसे गुण अधिक विकसित पाए गए। यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं और शिक्षकों को गीता को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि गीता न केवल आध्यात्मिक विकास में सहायक है, बल्कि एक जिम्मेदार और नैतिक समाज का निर्माण करने में भी सहायक हो सकती है।

सुझाव -

1. शिक्षा प्रणाली में गीता का समावेशः गीता के शिक्षण को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
2. कार्यशालाओं का आयोजनः विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा और योग पर आधारित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
3. आधुनिक संदर्भ में गीता की व्याख्याः गीता की शिक्षाओं को आधुनिक जीवन के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाए।
4. सामाजिक कार्यक्रमः गीता के ''निष्काम कर्म'' सिद्धांत पर आधारित सामाजिक सेवा कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- श्रीवास्तव डी.एन. चर एवं उनका नियंत्रण मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2 ।
- श्रीवास्तव डी. एन सांख्यिकीय गणना मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2 ।
- पाण्डेय डॉ., राम शुक्ल डॉ 1996 षिक्षा का अर्थ, शिक्षा का उदेश्य विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2
- कपिल डॉ. एच. के. 2007 अनुसंधान विधियां भार्गव बुक हाउस आगरा ।
- पचोरी डॉ. गिरीश उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक प्रथम संस्करण 2009 इंटरनेषनल पब्लिशिग हाउस मेरठ ।
- शर्मा आर. 2009 अनुसंधान परिचय लाल बुक डिपो ।
- शर्मा आर. 2009 परिकल्पनाओं का प्रतिपादन, शिक्षा अनुसंधान मेरठ आर. लाल बुक डिपो ।
- मंगल एस.के. 2010 षिक्षा मनोविज्ञान एस.के. घोष पेंरटिस हाल ऑफ़ इंडिया प्रायवेट लिमिटेड न्यू दिल्ली ।
- सक्सेना एन.आर. स्वरुप 2011 शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।
- शर्मा डॉ. आर.ए. 2011 शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।